RP 18-19

Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 145 | Feb. 2019 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FEDERATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI, HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

- GUEST EDITOR -

Principal Dr. P. P. Sharma

- CHIEF EDITOR -

Dr. Dhanraj T. Dhangar

PRINCIPAL

Nutan Mahavidyalaya

SELU Dist. Parbhani

- EXECUTIVE EDITOR -

Dr. S. S. Choutmalwale

Dr. A. T. More | Dr. P. S. Patil

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 145 • Feb. 2019 • ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal

One Day National Seminar On

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI AND HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

... Organized by ...

Ajantha Education and Military Preparatory Institute, Aurangabad's

Indraraj Arts, Commerce & Science College, Sillod,

Dist. Aurangabad - 431112 (M.S.)

... Chief Editor ...

Dr. Dhanraj T. Dhangar

... Guest Editor ...

Dr. P. P. Sharma
Principal

... Executive Editor ...

Dr. S. S. Chouthaiwale (English)
Dr. A. T. More (Marathi)
Dr. P. S. Patil (Hindi)

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Impact Factor – 6.261 • Special Issue - 145 • Feb. 2019 • ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

One Day National Seminar On

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI AND HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

... Organized by ...

Ajantha Education and Military Preparatory Institute, Aurangabad's

Indraraj Arts, Commerce & Science College, Sillod,

Dist. Aurangabad - 431112 (M.S.)

Printed by

PRASHANT PUBLICATIONS

3, Pratap Nagar, Sant Dnyaneshwar Mandir Road, Near Nutan Maratha Mahavidyalaya, Jalgaon.

Website: www.prashantpublications.com Email: prashantpublication.jal@gmail.com

Ph: 0257-2235520, 2232800, 9665626717, 9421636460

EDITORIAL POLICIES - Views expressed in the papers / articles and other matter published in this issue are those of the respective authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily agree with the views expressed in the articles. All copyrights are respected. Every effort is made to acknowledge source material relied upon or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsibility for any inadvertent omissions.

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

SELU

१०५. मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श २८८
प्रा. डॉ.चाटे तुकाराम वैजनाथ
१०६. ''हिन्दी जनसंचार माध्यम और वैश्वीकरण के संदर्भ मे'' २९१
प्रा. विद्या बाबूराव खाडे डॉ. अलका श्रीकृष्ण डांगे
१०७. दलित विमर्श (प्रादेशिक आण्णाभाउ साठेजी के साहित्य में दलित विमर्श) २९३
प्रा.बाळासाहेब संभाजी कावळे
१०८. व्यावसायिक हिन्दी के नए प्रवाह में हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक दृष्टिकोन २९५
प्रा. डॉ. हाशमबेग मिर्झा, प्रा. पाटील एस. डी.
१०९. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श २९७
डॉ.अनिता मधुकर शिंदे, प्रा.खिडीवाले हनमंतराव मष्णाप्पा
११०. हिंदी कहानी में विकलांग विमर्श ३०१
प्रा. डॉ. वसंत माळी
१११. हिन्दी भाषा का अन्तराष्ट्रीय स्वरूप ३०४
डॉ. दत्ताशिवराम साकोळे
११२. आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास : विशेष संदर्भ 'अल्माकबूतरी' ३०६
डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
११३. आधुनिक हिंदी भाषा, साहित्य और संस्द्रति ३०८
डॉ. मीना साहेबराव खरात
११४. 'वर्तमान हिंदी साहित्य में हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृती का अंतरराष्ट्रीय रूप' ३१०
डॉ. शिल्पा जिवरग, अनुराधा एस. रामेह्रा
११५. आधुनिक हिंदी साहित्य का वैश्विक परिदृश्य (प्रवासी उपन्यासों के संदर्भ) ३१२
डॉ. बालाजी काशिनाथ जोकरे
११६. आदिवासी साहित्य:एक परिचयात्मक अध्ययन ३१५
डॉ.शेख हुसैन मैनोद्दीन
११७. व्यावसायिक हिंदी के नए प्रवाह : सिनेमा ३१९
प्रा.डॉ. न.पु. काळे
११८. हिन्दी नाटकों में : नारी की दशा एवं दिशा ३२१
प्रा. डॉ. सविता लोंढे
११९. इक्कीसवीं सदी स्त्री और हिंदी कहानी ३२३
राठोड संजीवनी जनार्धन
१२०. हिंदी कविता में किसान जीवन संघर्ष ३२५
करिश्मा पठाण
१२१. हिन्दी दलित–आत्मकथाओं में व्यक्त जातिगत भेदभाव ३२८
मणियार अखिल बाबूसाब
१२२. आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विमर्श (आदिवासी, दलित, विकलांग, नारी, किसान, किन्नर) ३३१
सुनंदा तुकाराम सालवे
१२३. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में सशक्त नारी की पहचान ३३३
डॉ. प्रमोद पाटील, वर्षा पांडुरंग काटोले
१२४. उद्वस्त होते ग्राम और किसानों की बढ़ती आत्महत्याएं ३३५
प्रा. डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद
१२५. मेहरून्निसा परवेज़ के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ('कोरजा' और 'अकेला पलाश' के संदर्भ में) ३३८
लामतुरे वसंत हिरामण
१२६. अमृतलाल नागर की कहानियों में नारी चित्रण ३४१
रुबीना शमीम खान
१२७. व्यावसायिक हिंदी के नए प्रवाह (कम्प्युटर और हिंदी) ३४३
प्रा. डॉ. सरला दवंडे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 145 : Recent Trends in English, Marathi and Hindi Language and Literature

आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास : विशेष संदर्भ 'अल्माकबूतरी'

डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की
हिंदी विभागाध्यक्ष, स्वा. रा.ती.म.वि. नांदेड संलग्नित नूतन महाविद्यालय, सेलू

आधुनिकता एक विवेकशील दृष्टिकोन है, जिसमें अबौध्दिक धारणाओं, मिथ्या, मान्यताओं एवं कुंठित चिंतन का कोई स्थान नही। व्यावहारिकता, यथार्थता, आस्था प्रगति में अपना, रुढ़ियों का परित्याग, प्रयोगधर्मिकता व दृष्टिकोन की वैज्ञानिकता इसके गुण है। आधुनकता अतित से प्रेरित पृथकता और नवीन भावों के अन्वेषण प्रक्रिया है। मनुष्य का धीरे-धीरे विकास हुआ जिसे हम रुढ़ि कहते है, वह प्राचीन काल में आधुनिकता की सूचक होगी। अर्थात आधुनिक दृष्टिकोन पर आधारित होती है क्योंकि यह एक सोच है, विचार है, जो व्यक्ति को इस दुनिया के प्रति जागरुक मानवीय दृष्टिकोन से जीने का सही मार्ग दिखलाती है।

मानवीय दृष्टिकोन से जीने का सही मार्ग आधुनिक महिला उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में परिलक्षित होता है। मैत्रेयी ऐसी वर्ग का चित्रण करती है जो उपेक्षित है किंतु यही उपेक्षित वर्ग परिस्थितियों का सामना करते हुए उसके खिलाफ विद्रोह करते दिखाई देते हैं। विशेषकर मैत्रेयी के स्त्री पात्रों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य दैहिक स्तर से उपर उठकर नयी सोच, नया विचार, नया जीवन दर्शन देने की बात उनके पात्रों को उँचा उठाती है। अपने अस्तित्व की लढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वत्व की रक्षा करने को पात्र हरदम लड़ने को तैयार दिखाई देते हैं। अपने वजुद अपनी जिंदगी को स्थापित कर अपनी खास पहचान बनाते दिखाई देते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में आधुनिकता सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक स्तर के साथ-साथ वैचारिक स्तर पर भी दिखाई देती है। मैत्रेयी पुष्पा के लगभग सभी उपन्यास आँचलिक होने के बावजूद भी उनके उपन्यासों का ग्रामिण परिवेश जो रुढ़ि, परंपरा एवं व्यवस्था से टकराहट कर जीवन के समस्त अंगों का चित्रण मैत्रेयी ने किया है। विशेषकर नारी जो वैयक्तिकता, सामाजिकता से टकराती हुई निरंतर संघर्षरत दिखाई देती है। मैत्रेयी पुष्पा के सभी उपन्यासों मे आधुनिकता दिखाई देती है किंतु प्रस्तुत आलेख मैनें 'अल्माकबूतरी' के पात्रों का चित्रण करते हुए चरित्रों का निर्माण कर पारम्पारिकता से आधुनिकता की ओर पात्रों को साकार किया है।

मैत्रेयी पुष्पा 'अल्माकबूतरी' सन् २००० में प्रकाशित उपन्यास है। यह उपन्यास बुंदेलखंडी ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखा गया है। संघर्षमयी ग्रामीण जीवन-यापन, भ्रष्ट समाज व्यवस्था, कथा की नवीनता, जन-जीवन की असमानता, मौलिकता के कारण अन्य उपन्यासों की तुलना में इस उपन्यास का विशिष्ट स्थान है। इस उपन्यास की कथावस्तु ग्रामीण और शहरी जीवन से जुड़ी कथा को आधार न बनाकर अपराधी मानी जानेवाली 'कबूतरा' घुमन्तू जनजाति जो भारत में स्वतंत्रता के बाद उपेक्षित और अभागी है, उसे आधार बनाकर कथावस्तु का निर्माण किया। रोहिणी अग्रवाल ने 'अल्माकबूतरी' की कथावस्तु पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है- 'अल्माकबूतरी' जनजाति की तीन पीढ़ियों के संघर्ष का [illegible] इतिहास है। पहली पीढ़ी भूरीबाई और उसके पति बीरसिंह के रूप में [illegible], स्वतंत्र भारत के उस आदर्शवादी दौर का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ नए सपनों, आशाओं और उत्साह के लिए भरपूर स्थान था।....दूसरी पीढ़ी के रुप में रामसिह की माँ भूरीबाई की लड़ाई सफलतापूर्वक लड़ने की चाह में स्कूल अध्यापक बन जाता है। अब वह सोलह आने कज्जा बन गया है- मन से, वचन से, कर्म से लेकिन जन्म से हीं। समाज बराबर उसे यह अहसास कराता है और उसके विकास से अपनी जड़े कमजोर होते देख तिलमिला जाता है।....तीसरी पीढ़ी का संघर्ष अधिक कड़ा और जटिल है।.....कदम और मंसाराम का नाजायज पुत्र राणा जानता है तो क्रोध और हताश से पगला उठता है।१ इस कथानक को केवल उपन्यास में दर्शाया नहीं, बल्कि आज भी हमारे भारत देश में ऐसी जनजातियाँ है जिसके जीवन में उन्होंने आजादी का सूरज देखा ही नहीं। उन्हें आजादी क्या होती है? यह भी मालूम नहीं।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास में कदमबाई मंसाराम के छल के कारण गर्भवती होती है। वह राणा को जन्म भी देती है, उसका पालन-पोषण करती है। कदमबाई का मातृत्व उस बच्चे को देखकर व्यक्त हुआ। कदमबाई के इर्द-गिर्द बसी दुनिया का पर्दा टाँक दिया। पालने की चमक-दमक में सफर करती माँ ने बच्चा हथेलियों पर उठा लिया। नन्ही सी नाक से भिड़ाकर सिर हिलाती हुई उसे चूमने लगी- तू मंसा माने का रुप। ठोड़ी तो एकदम ही.......हाथ, लोग पहचान लेते। पहचान ही लें।२ कदमबाई का बिना अपराधबोध राणा का स्वीकार करना, समाज से भी न डरना इस प्रसंग को भी आधुनिकता की दृष्टि देकर मैत्रेयी ने दर्शाया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्माकबूतरी' उपन्यास में अल्मा का संघर्ष दर्शाने के साथ-साथ उसका राजनीति में प्रवेश दर्शाया है। अल्मा के पिता रामसिंह ने सूरजभान के यहाँ गिरवी रखा था। बाद में वह श्रीराम शास्त्री जैसे मंत्री के यहाँ लायी जाती है। वह अकेली है। अपने पिता की हत्या का बदला लेना चाहती है। वह निरंतर श्रीराम शास्त्री को मारने की सोचती रहती है। अर्थात् निरंतर संघर्षशील रहती है- विचार बांढ़ की तरह आते। वह डूबने लगती। इसे कब मारुँ और कैसे मारुँ? सोचने सारी ताकत जाया हो रही है, बप्पा तुमने क्यों पढ़ाया-लिखाया? पढ़ाई-लिखाई सोचने पर मजबूर करती है। यह सोचने का समय नहीं, मरने-मारने की घड़ी है। मैं सबेरे से सांझ तक, सांझ से सबेरे तक कितनी जिंदगियाँ जीती हूँ, कितनी मौते मरती हूँ..... ।३ उपन्यास में श्रीराम शास्त्री की हत्या और अल्मा का श्रीराम शास्त्री

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU
PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

214

की चिता को अग्नि देना। श्रीराम शास्त्री की हत्या के कारण अल्मा का राजनीति में प्रवेश यह भी कबूतरा जनजाति में होने के बावजूद दर्शाकर मैत्रेयी ने उसे आधुनिक मोड़ देकर परंपरागत सोच को धक्का दिया। निश्चित ही अल्मा का राजनीति में प्रवेश आधुनिकता की दृष्टि से मैत्रेयी की नई भूमिका को दर्शाता है।

मैत्रेयी ने अल्मा के माध्यम से उन्हें कबूतरा जाति की होने के बावजूद भी आधुनिक दर्शाया है। कदमबाई को भी अर्थार्जन के लिए अपने डेरे में शराब बनाना-बेचना, चोरी करना, गुलेले चलाना, कुल्हाड़ी चलाना, शिकार करना, बंदूक चलाना से सारे कार्य अपने बेटे राणा को सिखाती है.....मैं तुझे लड़ने की विद्या सिखाऊंगी। खेतो के बीच गुलेलें चलती। फसलों को चीरते हुए पत्थर सनसनाकर निकल जाते। कदमबाई दोनों हाथों से कुल्हाड़ चलाकर दिखाती। दोनों हाथों से लाठि घुमाती।४ जंगलिया के मौत के कारण कदमबाई अपने परिवार के अर्थार्जन के लिए इस कार्यों में कुशल दिखलाकर उसे आधुनिक नारी की तरह परिवार क परिचालन करनेवाली स्री के रुप में दर्शाया है।

मैत्रेयी ने प्रस्तुत उपन्यास में अल्मा, रामसिंह, राणा कबूतरा जनजाति से संबंधित होने के बावजूद भी उनकी शिक्षा के महत्व को मैत्रेयी ने समझा है। भूरी कबूतरा जाति की होने के बावजूद भी वह शिक्षा के महत्व को पहचानती थी। वह कहती है, विद्या रतन के आगे देह का खजाना कुछ भी नहीं।५ उसने अपने बेटे रामसिंह को पढ़-लिख बड़ा बनाने की ठान ली थी। रामसिंह की बेटी अल्मा को उपन्यास में पढ़ी-लिखी स्री के रुप में मैत्रेयी ने दर्शाया है। राणा और अल्मा को रामसिंह पढ़ाता है। उपन्यास में राणा और अल्मा को पढ़ाते समय रामसिंह कहता है- देख क्या रहा है, अभ्यास कर। यह तो सीखनी ही होगी। अब यह अंग्रेजों की नहीं, दुनिया भर की भाषा है। सबसे बड़ी बात साइन्स का आधार है। अब हम ऐसी गलतियाँ नहीं करेंगे की पीछे रह जाएँ। हमारी पुरखे इन्हीं गलतियों से इतने पिछडे कि हवा-पानी और धरती से बेदखल कर दिए गए।जमाना बदल रहा है, हम भी बदलेंगे।६ तात्पर्य मैत्रेयी ने इन पात्रों को आदिवासी जनजाति का होने के बावजूद भी शिक्षा के महत्त्व को समझाकर आधुनिकता की दृष्टि की पहल की है।

'अल्माकबूतरी' उपन्यास का अध्ययन करते समय एक नया दृष्टिकोन, नया विचार परिलक्षित होता है, वह यह कि उपन्यास आंचलिक होते हुए भी जीवन की बदलती हुई संकल्पनाओं, नवीनता के प्रति उदार दृष्टिकोन दिखाई देता है। शिक्षा, विज्ञान, शहरी प्रभाव के कारण आंचल सर्वाधिक प्रभावित हुआ। जिसका परिणाम सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक मूल्यों में काफी परिवर्तन हुआ है। 'अल्माकबूतरी' उपन्यास में मैत्रेयी ने स्री पात्रों द्वारा अपनी क्षमता के अनुसार अपने आप को परिवर्तित कर अपनी अस्मिता को जागृत किया। इस उपन्यास के पात्र भाग्य के शिकंजे से बाहर निकलकर पहली बार तर्क के आधार पर विचार करते है। रुढियों और परम्पराओं से हटकर शिक्षा, शहरीकरण, वैज्ञानिक उन्नति और औद्योगिकीकरण के कारण पात्र यथार्थ के धरातल पर अपनी वैज्ञानिक दृष्टि रखते है।

संस्कारों से बाहर निकलकर नये तरीके से अपने और आसपास के परिवेश को समझना चाहते है। पात्र व्यवस्था का विरोध कर अपने व्यक्तित्व के आस्तित्व के लिए लड़ाई लड रहे है। आधुनिकता के कारण 'अल्माकबूतरी' उपन्यास के पात्र अपनी योग्यता के अनुसार सक्षम बनकर जीवन-यापन करते दिखाई देते है। अर्थात आधुनिकता को प्रत्येक पल में जीवंत कर मैत्रेयी ने उसे 'अल्माकबूतरी' उपन्यास के माध्यम से काल सापेक्षता की कसौटी पर खरा उतारा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य, संपा. दया दीक्षित, रोहिणी अग्रवाल के आलेख से, पृ. सं. ३९-४०
२. अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. सं. ३१
३. वही पृ. स. ३६९
४. वही पृ. सं. ३७
५. वही पृ. स. १२५
६. वही पृ. सं. २५६

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani